Skill – 21

अनुकूलता (Adaptability)

अनुकूलता एक बहुत ही महत्वपूर्ण चारित्रिक विशेषता है

अनुकूलता को साधारण अर्थ में लोगों के साथ सामन्जस्य बैठाने की योग्यता को कहते हैं। अर्थात् हर स्थिति में अपने को व्यवस्थित रखना।

सभी शिष्टाचार तथा सदाचार का मूलस्रोत अनुकूलता है। जिस मनुष्य में अनुकूलता का गुण होता है वह सभी प्रकार की स्थिति में अपने को उसी प्रकार ढाल लेता है।

इस अनुकूलता के कारण वह कभी परेशान या चिन्तित नहीं होता न ही वह किसी प्रकार का कष्ट झेलने जैसी स्थिति में आता है। इसी अनुकूलता के गुण के कारण सभी लोग उसको पसंद करते हैं और उसकी इज्जत भी बढ़ती है, क्योंकि वह सभी प्रकार के लोगों में घुलमिल जाता है और किसी भी प्रकार से उनसे अलग नहीं दिखता है और न ही अलग दिखने या दिखाने का प्रयत्न करता है।

कहने का तात्पर्य ये है कि वह जिस प्रकार की सोसायटी में जाता है अपने को उसी प्रकार ढाल लेता है और इस गुण के कारण मनुष्य हर जगह सफल होता है।

अनुकूलता जीवन के सभी पहलुओं में की जाती है। इसी अनुकूलता के कारण सामने वाले लोगों, रिश्तेदारों, मित्रों या मेजबानों को किसी भी तरह की शर्मिन्दगी या नीचापन नहीं महसूस होता।

अनुकूलता के कारण हम अपने प्रति दूसरे के व्यवहारों को अत्यधिक प्रभावित कर सकते हैं और दूसरों के साथ बेहतर निभा सकते हैं।

व्यावसायिक परिस्थिति में अनुकूलता मनुष्य को आगे बढ़ने में मदद करती है। व्यावसायिक अनुकूलता के कारण कर्मचारी तथा व्यवसाय दोनों की वृद्धि होती है। व्यवसाय में नये–नये बदलाव आते हैं। उसी बदलाव में अपने को अनुकूलन ही अनुकूलता का सही उदाहरण है।

उपयोगी बातें :

- यदि आप किसी के घर मेहमान बन के जायें और वह मेजबान आपसे कहे कि हमारे यहाँ बाथरूम में शीशा नहीं है हम लोग दाढ़ी बाहर शीशा रख कर बनाते हैं तो आप फौरन कहिए, अरे कोई बात नहीं हम भी बाहर शीशा रखकर ही दाढ़ी बनाते हैं। बाथरूम में बनाने की आदत नहीं।

- यदि आप किसी के यहाँ गर्मी में गये हैं वहाँ कूलर या ए0 सी0 नहीं है तो ऐसा मत जाहिर करिए कि आप को कूलर या ए0 सी0 की आदत है पंखे में आराम नहीं मिलता।
- इसी प्रकार यदि आप किसी पार्टी या दावत में किसी के यहाँ जाते हैं जहाँ कुछ ऐसी वस्तुएं रहती हैं जो आपको पसंद नहीं हैं तो आप ये न कहें कि मैं ये सब नहीं खाता बल्कि थोड़ा बहुत जो पसंद की वस्तु हो उसका सेवन कर लें।